श्री सत्य साँई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा–विज्ञान विश्वविद्यालय सीहोर (मध्यप्रदेश)

हिन्दी विभाग

एम.ए. (हिन्दी) दो वर्षीय पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम विवरणिका

(शैक्षणिक सत्र)

2021–22

विभागों की दृष्टि :

विश्वसनीयता, अखंडता और नैतिक मानकों के साथ लगातार बदलते सामाजिक आवश्यकताओं के लिए (हिन्दी साहित्य) में उच्चतर शिक्षा प्रदान करने के लिए एक उत्कृष्ट केंद्र होना ।

विभागों का मिशन:

ए.प्रोग्राम का मिशन और उद्देश्य:

A.1 मिशन: के मिशन कार्यक्रम में हिन्दी साहित्य शिक्षार्थियों के बीच समाज के बारे में एक उद्देश्य समझ विकसित करना है। पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षार्थियों को विभिन्न साहित्यिक सामाजिक समस्याओं और स्थितियों के बारे में जागरूक बनाने और सामाजिक व्यवहार के सार्वभौमिक सिद्धांतों की खोज करने के लिए नई शिक्षा नीति विभिन्न विशेष दृष्टिकोणों को संश्लेषित करने में उनकी मदद करने का प्रयास किया गया है।

2. उद्देश्य: हिन्दी साहित्य के उद्देश्यों कार्यक्रम है उद्भव और पश्चिम में हिन्दी साहित्य विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में छात्रों को लागू करना।

- भारतीय समाज और साहित्य के बारे में शिक्षार्थियों को इसकी संरचना और संस्थानों पर चर्चा के साथ संवेदनशील बनाना।
- समाज और साहित्य के सामने आने वाली प्रक्रियाओं, मुद्दों और सामाजिक समस्याओं के बारे में जानने वालों को जागरूक करना।
- विकास और ग्रामीण विकास के साथ-साथ शहरी समाज और साहित्यिक प्रक्रियाओं को समझना।
- राजनीतिक और साहित्यिक प्रणाली की प्रकृति और कार्यप्रणाली और राजनीतिक प्रक्रियाओं के साथ शिक्षार्थियों को परिचित करना।

B.हिन्दी साहित्य के मिशन और लक्ष्यों के साथ कार्यक्रम की प्रासंगिकता :

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, SSSUTMS के पास इस मिशन के साथ संबंधित होने के लिए अप्रकाशित तक पहुंचने के लिए दृष्टि है, हिन्दी साहित्य कार्यक्रम प्रथम चरण में शिक्षार्थियों को उच्च शिक्षा प्रदान करने का एक प्रयास है। हिन्दी साहित्य समाज के बारे में हमारी समझ को बेहतर बनाता है और सामाजिक क्रिया शक्ति बढ़ जाती है। यह समझना महत्वपूर्ण है एक व्यक्ति की सहायता करता है खुद को, अपने क्षमता, प्रतिभा और सीमाओं। यह उसे खुद को बदलती परिस्थितियों, समाज के ज्ञान, सामाजिक समूहों, सामाजिक संस्थानों, संघों, उनके कार्यों आदि के लिए समायोजित करने में सक्षम बनाता है जो हमें एक प्रभावी सामाजिक जीवन जीने में मदद करता है। हिन्दी साहित्य और अधिक उद्देश्य तर्कसंगत और उदार बनने के लिए हमें बनाया है। इसने छात्रों को अपने पूर्वाग्रहों, भ्रांतियों, अहंकारी महत्वाकांक्षाओं और वर्ग और धार्मिक घृणाओं को दूर करने के लिए प्रभावित किया

है। इसके अलावा, हिन्दी साहित्य के शिक्षार्थी कारखानों और सरकार, सामाजिक सुरक्षा, अपराधियों के सुधार , सामाजिक कल्याण, शिक्षा और परिवार नियोजन आदि के क्षेत्र में काम करने के लिए पात्र हैं ।

C. शिक्षार्थियों के संभावित लक्ष्य समूह की प्रकृति:

हिन्दी साहित्य में कार्यक्रम के लिए शिक्षार्थियों का लक्षित समूह वे हैं (ए) जिन्होंने कला के साथ अपना इंटरमीडिएट पूरा किया है, (बी) सेवा कर्मियों में अपने कौशल और ज्ञान को बेहतर बनाने के लिए तत्पर हैं ताकि वे अपने स्वयं के संगठन में सीढ़ी पर जा सकें। अन्यत्र और (ग) ऐसे व्यक्ति जो विभिन्न कारणों से समाजशास्त्र में उच्च शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ हैं।

D. विशिष्ट कौशल और क्षमता प्राप्त करने के लिए ओपन और डिस्टेंस लर्निंग मोड में आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रम की उपयुक्तता :

- यह शिक्षार्थियों को आधुनिक बदलती परिस्थितियों पर अद्यतित होने में मदद करता है।शिक्षार्थियों अच्छे नागरिक बनने के लिए और वे समुदाय समस्याओं के समाधान के लिए योगदान करते हैं।

- समाज और साहित्य का ज्ञान और योजना बनाने के लिए हिन्दी साहित्य ज्ञान सहायक होता है। यह सामाजिक सुधार और सामाजिक पुनर्गठन का एक वाहन है ।
- शिक्षार्थी साहित्य और समाज की समस्याओं के बारे में अध्ययन कर सकेंगे । यह लोगों के सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए कई सामाजिक उपायों को करने में कई सरोकारों की मदद करेगा।
- शिक्षार्थियों विभिन्न साहित्यिक सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक मुद्दों पर अनुसंधान शुरू करने के लिए सक्षम हो जाएगा। अनुसंधान प्रक्रियाओं में विशेष रूप से प्रशिक्षित साहित्यिक सामाजिक -आर्थिक, राजनीतिक,व्यवसाय, सरकार, उद्योग, सामाजिक कल्याण, विज्ञापन, प्रशासन और सामुदायिक जीवन के कई अन्य क्षेत्रों में बढ़ती मांग में हैं।

एम .ए. हिन्दी

प्रस्तावना- एम .ए. हिन्दी स्नातकोत्तर स्तर का कार्यक्रम है जिसका मुख्य उद्देश्य विधार्थी के विवेक को विस्तार देते हुए गहन अध्ययन तथा शोध की उत्कंठा विकसित करना है| ज्ञान की शाखाओं के साथ साथ विश्व को सजग, आलोचनात्मक,विवेक शील और संवंदन शील व्यक्तितव की आवशयकता है ,जो समाज की नकारात्मक शक्तियों के विरुद्ध समानता और बंधुतत्व के भाव की स्थापना कर सके साहित्य का अध्ययन मनुष्य को इस संद्रभ मेँ विस्तार देता है तथा मानवता की विजय मे उसके विश्वास को द्रढ़ कर्ता है |भाषा आलोचना ,काव्य शास्त्र का अध्ययन जहां सैद्धांतिक समझ को विस्तृत कर्ता है वहीं कविता,नाटक,कहानी मेँ उन सिद्धांतों को व्यवहारिक रूप समझने की

युक्तिया छिपी रहती है | इस प्रकार एम ए हिन्दी का पाठ्यक्रम विधार्थी को सैद्धांतिक और व्यवहारिक दोनों रूपो मेँ सक्षम बनाता है |साथ ही पाठ्यक्रम की सरचना इस बात की आज़ादी भी देती है की वह मुक्त ऐच्छिक पाठ्यक्रम में अपनी इच्छा से विभिन्न विषय पढ़ सके |

उद्देश्य-

एम ए पाठ्यक्रम का उद्देश्य विधार्थी को स्नातक के पश्चात विषयों का गभीर अध्ययन की ओर प्रेरित करना है एम ए पाठ्यक्रम को चार सेमेस्टर विभाजित करते हुए 98 क्रेडिट के रूप मेँ प्रस्तुत किया गया है | मूल पाठ्यक्रम को 4 प्रश्नोपत्र का विभाजन तीन सत्रो में किया गया है ,साथ ही चतुर्थ सत्र मेँ ऐच्छिक प्रश्न पत्र तथा द्वितिय -चतुर्थ सत्र में मुक्त ऐच्छिक पाठ्यक्रम का प्रावधान हैं जिससे विधार्थी की अंतर अनुशासनिक समझ का भी विस्तार होता हैं |सभी विधार्थीयो के लिए

प्रयोजन कार्य का भी प्रावधान हैं जिससे भविष्य मेँ शोध सुगम हो सके |

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य भाषा और समाज की जटिल संबंधो की पहचान करना भी हैं | जिससे विधार्थी देश,समाज ,राष्ट्र और विश्व के साथ बदलते सामी मेँ व्यापक सरोकारों से अपना संबंध जोड़ सके साथ ही साथ उसकी भाषा कोशल ,लिखने और सम्प्रेषण क्षमता का विकास हो सकें भाषा विज्ञान ,शैली विज्ञान,अनुवाद, सौंदर्य शास्त्र ,जनसंचारमाध्यम हिन्दी साहित्य ,भारतीय साहित्य और प्रयोजन मूलक भाषा विज्ञान आदि विषयों का अध्ययन विधार्थीयो के क्षैतिज का विस्तार करने में सहायक हैं |

परिणाम- इस पाठ्यक्रम को पढ़ने पढ़ाने की देशा मैं निम्न लिखित परिणाम सामने आएगे

1) इस पाठ्यक्रम के माध्यम से सीखने सीखाने की प्रक्रिया मेँ हिन्दी भाषा का आरंभिक स्तरसे अब तक बदलते रूपों की जानकारी प्राप्त की जा सकेगी |
2) भाषा के सेद्धांतिक रूप के साथ-साथ व्यवहारिक पक्ष को भी जाना जा सकेगा |
3) उच्च शैक्षिक स्तर पर हिन्दी भाषा किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हे , इससे संबन्धित परिणामो को प्राप्त किया जा सकेगा |
4) छात्र हिन्दी भाषा को सीखने की प्रक्रिया मेँ भाषागत मूल्यों को व्यवहारिक रूप से भी जन सकेंगे
5) व्यवसायिक क्षमता को बढ़ावा देने के लिए भाषा,अनुवाद,कम्प्युटर और सिनेमा जैसे विषयों को हिन्दी से जोड़कर पढ़ना ,जिससे बाज़ार के लिए अवश्यक योगिता का भी विकास किया जा सकेगा |
6) हिन्दी के अतिरिक्त भारतीय भाषा का ज्ञान भी अपेक्षित रहेगा जो छत्रों के व्यक्तित्व विकास मई सहायक होगा तथा अभिव्यक्ति क्षमता का विकास भी किया जा सकेगा |

7) साहित्य के माध्यम से सौंदर्य बोध ।नैतिकता ,पर्यावरण और सामाजिक समरसता संबंधी विषयों की समझ विकसित होगी |

8) साहित्य की विधाओ के माध्यम से विधर्थी की रचनात्मकता को दिशा दशा कविता ,कहानी और नाटक जैसी विधाओं द्वारा विधार्थी की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करना |

9) साहित्य का आदिकालीन संदर्भों से लेकर समकालीन रूप से परिचय करना जिससे विधार्थी साहित्यकार और युगबोध का संबंध को परख और पहचान सके|

10) साहित्य विकास का निर्माण करते हुएन सूचना प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में हिन्दी की जानकारी मीडिया के प्रतिवेदन का निर्माण कर सकें |

11) प्राचीन और नवीन भारतीय एवं पाश्चात्य सौंदर्य सिद्धांतों तथा काव्यशास्त्रीय प्रतिमानों का अध्ययन विश्लेषण करने की क्षमता विकसित होगी |

शिक्षण -प्रशिक्षण प्रक्रिया

सीखने की प्रक्रिया मैं इस पाठ्यक्रम मैं हिन्दी भाषा दक्षता को मजबूती देती हैं |छात्र हिन्दी भाषा मैं नयेपन और वैश्विक माध्यम की निर्माण प्रक्रिया मैं सहायक बन सकें अपनी भाषा मैं व्यवहारकुशलता एवं निपुणता प्राप्त कर सकें साहित्य की समझ विकसित हो सकें तथा आलोचनात्मक साहित्यक विवेक निर्मित किया जा सके इसके लिए निम्न बिन्दुओं को देखा जा सकता हैं |

कक्षा व्याख्यान

समूहिक परिचर्चा

सेमिनार योजना

साहित्यिकता के समझ की दिशा

प्रदर्शन कलाओं को वास्तविक रूप मैं देखना

कक्षाओं मैं पठन पाठन पद्धति

लिखित परीक्षा

दिनांक मूल्याकन

शोध सर्वे

वाद-विवाद

आशु प्रस्तुति

कम्प्युटर आदि का व्यवहारिक ज्ञान

दृश्य श्रव्य माध्यमों की जानकारी

काव्य वाचन पाठन और आलोचनात्मक मूल्यांकन

कथा पाठ और वाचन में अंतर समझाना

आलोचनात्मक मूल्यांकन पर बल

मूल्याकन विधि -

1) हिन्दी भाषा का व्यवहारिक मूल्यों पर आधारित परियोजना कार्य व मूल्यांकन
2) भाषिक नमूना तैयार करना और विश्लेषणविध्यार्थियों का मोखिक और लिखित मूल्यांकन
3) पी.पी .टी. बनाने के लिए प्रोत्साहित करना
4) विधा विशेष के भाव सौंदर्य ,छंद ,अलंकार ,रस, गुण,शब्द आदि का सौंदर्य सभी आधुनिक संदर्भ में परिचित कराया जाना चाहिए |
5) भाव विश्लेषण पीआर आधारित प्रश्न उत्तर का मूल्यांकन करना |
6) पारंपरिक और आधुनिक तकनीकी माध्यमों की सहता से अध्ययन -अध्यापन
7) समूह -परिचर्चा
8) सेमेस्टर परीक्षा के माध्यम से विषयगत जानकारी का मूल्यांकन

पाठ्यक्रम विवरणिका

एम.ए.(हिन्दी) दो वर्षीय पाठ्यक्रम

भूमिका-

सेमेस्टर पद्धति को लागू करने की दृष्टि से एम ए हिन्दी का प्रस्तुत पाठ्यक्रम अपेक्षित संशोधन एवं परिवर्धन के बाद 2014 मैन लागू किया गया था | सी बी सी एस पद्धति के अनुसार यह पाठ्यक्रम वर्ष 2014-15 प्रथम सेमेस्टर से लागू किया गया पाथुक्रम एवं प्रश्न पत्रों के प्रारूप तथा अंक- विभाजन मेँ अपेक्षित एवं समुचित परिवर्तन किए गए है|

संबद्धता -

हिन्दी विभाग द्वारा प्रस्तावित यह पाठ्यक्रम श्री सत्य साईं विश्व विधालय के लिए होगापाठ्यक्रम सरचना - एम ए हिन्दी का पाठ्यक्रम दो वर्षीय दो वेर्षीय पाठ्यक्रम होगा जिसे दो विभागों मेँ विभाजित किया जाएगा प्रत्येक भाग मेँ दो -do सेमेस्टर होंगे ,जिनहे सेमेस्टर

भाग	वर्ष	सेमेस्टर
I	प्रथम वर्ष	सेमेस्टर I सेमेस्टर II
II	द्वित्तिय वर्ष	सेमेस्टर III सेमेस्टर IV

विश्वविध्यलय अनुदान आयोग द्वारा निर्मित श्री सत्य साईं विश्व विध्यालय द्वारा स्वीकृत चार सेमेस्टर के चयन आधारित क्रेडेट पद्धति सी बी सी एस के अंतर्गत सम्पूर्ण पाठ्यक्रम तथा मूल्याकन पद्धति को तैयार किया गया हें |

MA HINDI FIRST SEMESTER								
SUBJECT CODE	COMPULSORY/ OPTIONAL	SUBJECT NAME	CCE/INTERNAL		THEORY		TOTAL	
			MAX	MIN	MAX	MIN	MAX	MIN
HIN-101	COMPULSORY	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य और उसका इतिहास-I	30	12	70	28	100	40
HIN-102	COMPULSORY	आधुनिक हिन्दी गद्य और उसका इतिहास-I	30	12	70	28	100	40
HIN-103	COMPULSORY	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र-I	30	12	70	28	100	40
HIN-104	COMPULSORY	हिन्दी साहित्य का इतिहास एवं उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि-I	30	12	70	28	100	40

MA HINDI SECOND SEMESTER								
SUBJECT CODE	COMPULSORY/ OPTIONAL	SUBJECT NAME	CCE/INTERNAL		THEORY		TOTAL	
			MAX	MIN	MAX	MIN	MAX	MIN
HIN-201	COMPULSORY	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य और उसका इतिहास-II	30	12	70	28	100	40
HIN-202	COMPULSORY	आधुनिक हिन्दी गद्य और उसका इतिहास-II	30	12	70	28	100	40
HIN-203	COMPULSORY	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र-II	30	12	70	28	100	40
HIN-204	COMPULSORY	हिन्दी साहित्य का इतिहास एवं उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि-II	30	12	70	28	100	40

MA HINDI 3 SEMESTER

SUBJECT CODE	COMPULSORY/ OPTIONAL	SUBJECT NAME	CCE/INTERNAL		THEORY		TOTAL	
			MAX	MIN	MAX	MIN	MAX	MIN
HIN301	COMPULSORY	आधुनिक हिन्दी काव्य और उसका इतिहास-I	30	12	70	28	100	40
HIN302	COMPULSORY	भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा -I	30	12	70	28	100	40
HIN303	COMPULSORY	नाटक निवंध एंवम गद्य की विधाएं-I	30	12	70	28	100	40
HIN304	COMPULSORY	परियोजना कार्य की रूपरेखा	-	-	-	-	100	50

MA HINDI
FOURTH SEMESTER

SUBJECT CODE	COMPULSORY/ OPTIONAL	SUBJECT NAME	CCE/INTERNAL		Theory		Total	
			MAX	MIN	MAX	MIN	MAX	MIN
HIN-401	COMPULSORY	आधुनिक हिन्दी काव्य और उसका इतिहास -II	30	12	70	28	100	40
HIN-402	COMPULSORY	भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा-II	30	12	70	28	100	40
HIN-403	COMPULSORY	नाटक निवंध एंवम गद्य की विधाएं-II	30	12	70	28	100	40
HIN-404	COMPULSORY	कबीरदास	30	12	70	28	100	40
HIN-405	COMPULSORY	परियोजना कार्य	-	-	-	-	200	100

Faculty Of Education
Class: M.A. I Sem (Hindi)
Paper I : प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य तथा उनका इतिहास -I
Paper Code: Hin -101

कोर्स ऑब्जेक्टिव–

हिन्दी साहित्य के प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास का विश्लेषणात्मक ज्ञान देना। मध्यकालीन साहित्य से संबंधित अवधारणाओं और उनके प्रति विभिन्न मतों का परिचय देना।

विषय आउट कम्स

हिंदी साहित्य के मध्यकालीन युग का विशिष्ट ज्ञान। इतिहास, आलोचना और विचारकों की समझ विकसित होगी।

1– जीवन के दर्शन के साथ–साथ विद्यापति के साहित्य को समझना।

2– भक्तिकालीन सतं कवि कबीरदास और जायसी के लेखन का अध्ययन करने के लिए।

3– सूरदास और तुलसी दास की कृष्ण भक्ति और राम भक्ति कविता का अध्ययन करने के लिए भक्ति सस्ंकृति का दर्शन और हमारे दिन–प्रतिदिन के जीवन पर इसका प्रभाव।

4– जीवन के दर्शन के साथ–साथ दादू दयाल, मीराबाई और रसखान के साहित्यिक कायों को भी समझते हैं।

पाठ्यक्रम –

इकाई– 1 व्याख्या

1– विद्यापति–20 पद (विद्यापति, जय भारती प्रकाशन, इलाबाद) पद क्रमांक–1,4,5,7,8, 11,12, 14,15,16,20,22,23,26,27,28,31,35,36,39,

2– कबीर–कबीर ग्रंथावली–डॉ– श्याम सुन्दर दास गुरूदेव को अंग (साखी क्रमांक 1 से 10), सुमिरण को अंग (साखी क्रमांक 1 से 10), ज्ञान–विरह को अंग (साखी क्रमांक 1 से 10), ज्ञान–विरह के अंग (साखी क्रमांक 1 से 10) परचा को अंग (साखी क्रमांक 1 से

3– जायसी–पद्मा व संपादक–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पद क्रमांक–1,11,16,21, 24, 50,60,65,69,70 (दस पद) (मानसरोवर खण्ड ,वं नागमती वियोग खण्ड)

इकाई– 2

विद्यापति, कबीर और जायसी से सम्बन्ध आलोचना त्मकप्रश्न

इकाई– 3

प्राचीन काल एवं मध्य कालीन काव्य (निर्गुण धारा) का इतिहास : प्रमुख प्रवृत्तियां एवं रचना कारो ंसे सम्बन्धित प्रश्न

इकाई–4

द्रुतपाठ के कवि–चन्दबर दाई,अमीर खुसरो, रैदास, नाम देव से सम्बन्धित लघु उत्तरीय प्रश्न

इकाई– 5

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (सम्पूर्ण पाठ्यपुस्तक से)

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. विद्यापति – संपादक डॉ आनंद प्रकाश दीक्षित
2. कबीर ग्रंथावली – डॉ श्यामदास
3. पद्मावत – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ नगेन्द्र

Faculty of Education
Class: M-A- I Sem (HINDI)
Paper II : आधुनिक हिन्दी गद्य और उसका इतिहास -I
Code : HIN –102

कोर्स आब्जेक्टिव–

हिन्दी साहित्य में आधुनिक हिन्दी गद्य और उसका इतिहास का विश्लेषण। विभिन्न लेखकों और उनकी कृतियों का विशिष्ट ज्ञान।

विषय आउटकम्स–

हिन्दी साहित्य के गद्य का विशिष्ट ज्ञान प्रमुख लेखकों और उनकी कृतियों की समझ विकसित होगी।

1– सामाजिक – **आर्थिक** संदर्भ में आधनुनिक काल के **साहित्य** और विशेषताओं को समझना और उस कार की सांस्कृतिक और राजनितिक स्थिति।

2– भारतेन्दु युगीन द्विवेदी युगीन काव्यधारा के साहित्य का अध्ययन करने के लरए काव्यधारा छायावादोत्तर कविधारायण

3– भारतेन्दु युगीन द्विवेदीयुगीन छायावाद के प्रख्यात हिंदी लेखन की पहचान और विश्लेषण करने के लिए छायावादी युग और उनके लेखन के विभिन्न कौशल।

पाठ्यक्रम –

इकाई–1 व्याख्या

1– स्कन्दगुप्त – जय शंकरप्रसाद

2– आधे–अधूरे – मोहन राकेश

3– गोदान – प्रेमचन्द

इकाई– 2

स्कन्दगुप्त, आधे– अधूरे एवं गोदान से समीक्षात्मक प्रश्न।

इकाई– 3

हिन्दी नाटक, रंगमंच एवं उपन्यास के इतिहास की विविध प्रवृत्तियाँ और रचनाकारों पर निबंधात्मक प्रश्न।

इकाई– 4

लघुउत्तरीय प्रश्न–द्रुतपाठ में निर्धारित गद्यकारों से सम्बद्ध लघुउत्तरीय प्रश्न होगे।

1 नाटकार –भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, डॉ–रामकुमार वर्मा, जगदीशचन्द्र माथुर, धर्मवीर भारती, लक्ष्मीनारायण लाल।

2 उपन्यासकार–जैनन्द्र, अमृतलाल नागर, निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, मन्नू भंडारी

इकाई –5

वस्तुनिनष्ठ प्रश्न (सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से)

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. स्कन्द गुप्त	–	जयशंकर प्रसाद
2. आधे–अधूरे	–	मोहन राकेश
3. गोदान	–	प्रेमचंद
4. शेखर एक जीवनी	–	अज्ञेय
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास	–	डॉ नगेन्द्र
6. हिन्दी नाटक के सौ बरस	–	शिल्पायन

Faculty of Education
Class: M-A- I Sem (HINDI)
Paper III : भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र-I
Code : HIN -103

कोर्स आब्जेक्टिव–

भारतीय पाश्चात्य काव्यशास्त्र की समझ विकसित होगी। कृतियों के विश्लेषण हेतु पाश्चात्य चिंतन का पक्ष स्पष्ट होगा।

विषय आउट कम्स –

पाश्चात्य काव्यशस्त्र की समझ भाषा, कला की आवश्यकता और जीवन के बीच आलोचनात्मक संबंध निर्माण करती है। इससे पाश्चात्य चिंतन परंपरा की समझ विकसित होगी।

1– भारतीय कविताओं को समझते हैं।

2– काव्य रस अरंकार और छन्द के बारे में अध्ययन करना

3– रस की **परिभाषा** प्रकार महत्व का अध्ययन करना और अरंकार रीति ध्वनि और भारतीय संदर्भ में वक्रोक्ति सम्प्रदाय।

पाठ्यक्रम –

इकाई– 1 संस्कृत काव्य शास्त्र–काव्य–लक्षण–हेतु, काव्य–प्रयोजन, काव्य के प्रकार रस–सिद्धांत रस का स्वरूप, रस निष्पत्ति, रस अंग, साधारणीकरण, सह्दय की अवधारणा।

अलंकार–सिद्धांत–मूल स्थापना, अलंकारों की वर्गीकरण।

इकाई–2

रीति–सिद्धांत– रीति की अवधारणा, काव्य–गुण एवं शैली, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापना.।

वक्रोक्ति सिद्धांत–वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति व अभिव्यंजनावाद।

इकाई– 3

ध्वनि सिद्धान्त– ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि–सिद्धान्त की प्रमुख स्थापना, ध्वनिकाव्य के प्रमुख भेद, गुणीभूत व्यंग्य, चित्रकाव्य।

औचित्य सिद्धान्त–प्रमुख स्थापनां, औचित्य के भेद।

इकाई– 4

हिन्दी कवि–आचार्यो का काव्य शास्त्रीय चिंतन– लक्षण–काव्य परंपरा एवं काव्य शास्त्रीय शिक्षा।

इकाई– 5

हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियाँ – शास्त्रीय, व्यक्तिवादी/सौष्ठववादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक मनोविश्लेषणात्मक सौन्दर्य शास्त्रीय, शैली वैज्ञानिक और समाज शास्त्रीय अध्ययन।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. भारतीय काव्य शास्त्र – प्रो सत्यदेव चौधरी
2. रस सिद्धान्त – डॉ सुंदरलाल कथुरिया
3. रस मीमांसा – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
4. ध्वनि सिद्धान्त तथा तुरनीय साहित्य चितंन – डॉ बच्चुलाल अवस्थी
5. हिन्दी साहित्यशस्त्र – डॉ कृष्ण वल्लभ जोशी
6. भारतीय एवं नाश्चात्य काव्य शास्त्र
7. आलोचक और आलोचना – डॉ बच्चन सिंह
8. भारतीय काव्य शास्त्र – डॉ योगेन्द्र प्रताप सिंह
9. रस – डॉ नगेन्द्र
10. सिद्धांत और अध्ययन – बाबु गुलाबराय

Faculty of Education

Class: M-A- I Sem (HINDI)

Paper I : हिन्दी साहित्य का इतिहास एवं उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि-I

Code: HIN 104

कोर्स आब्जेक्टिव–

हिन्दी साहित्य के इतिहास का विश्लेषणात्मक ज्ञान देना।

इतिहास लेखन, प्रमुख इतिहास ग्रंथ और आधुनिक युगों का विशिष्ट ज्ञान प्रदान करना।

विषय आउट कम्स–इतिहास लेखन और साहित्यिक इतिहास की समझ विकसित होगी।

विषय आउट कम्स –

हिन्दी साहित्य के इतिहास का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

1– हिंदी भाषा और उसके साहित्य की उत्पत्ति को समझना।

2– हिंदी भाषा परिवार की बोलियों की पहचान करना।

3– खड़ीबोली हिंदी के विकास का विश्लेषण।

4– साहित्य के इतिहास की अवधारणा को समझना।

5– हिंदी साहित्य के वर्गीकरण के आधार को समझना।

6– हिंदी के प्रत्येक कार को दिए गए नामों के महत्व और आधार को समझन साहित्य।

7– आदिकाल भत्ति काल रीतिकार और आधुनिककाल की विशेषताओं को समझना

सामाजिक – उस अवधि की सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थिति।

8– प्रत्येक काल के प्रख्यात हिंदी लेखकों की पहचान करना।

9– हिन्दी साहित्य में उद्भव का कारण समझना।

10– आधुनिक काल की साहित्यिक प्रवृत्ति्यों को समझना।

11– हिंदी नाटक, छोटी कहानियों और उपन्यासों के विकास के इतिहास को समझना।

12– हिंदी साहित्य में महिलाओं और दलितों के प्रवचन को समझना।

पाठ्यक्रम –

इकाई –1

हिन्दी साहित्येतिहास दर्शन एवं पृष्ठभूमि, हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परंपरा और पद्धतियां, साहित्येतिहास के पुनरालेखन की समस्या, हिन्दी साहित्य का काल विभाजन एवं नामकरण।

इकाई –2

आदिकाल की विशेषताएं एवं साहित्यिक प्रवृत्तिया, रासो, फाग, चर्चरी, बेली, षड़यंत्र और बरहमसा। आदिकालीन हिन्दी रासो, सिद्धनाथ जैन साहित्य। अमीर खसुरो की कविता। विद्यापति और उनकी पदावली तथा लौकिक साहित्य। आदिकालीन प्रतिनिधि रचनाकार एवं उनकी रचनाएं आदिकालीन गद्य साहित्य। आदिकाल का समग्र मूल्यांकन।

इकाई –3

भत्तिकाल की ऐतिहासिक सास्कृतिक,राजनीतिक ,सामाजिक, धार्मिम एवं साहित्त्यिक पृष्ठभूमि का उद्धव और विकास, भक्ति आन्दोलन का अखखर भारतीय स्वरूप भक्तिकालीन विभिन्न काव्य धाराएं औय उनका विश्रेषण।

इकाई –4

संत काव्य परंपरा, प्रमुख कवि एवं संत साहित्य की विशेषताएं। सूफी प्रेमाख्यान काव्य परंपरा प्रमुख कवि और विशेषताएं।

सगुण भक्ति काव्य– राम भक्ति काव्य धारा के प्रमुख कवि उनका काव्य। रामभक्ति काव्य की विशेषताएं।

कृष्ण भक्ति काव्य– कृष्ण भक्ति काव्य एवं प्रमुख कवि कृष्ण भक्ति काव्य की प्रभुख विशेषताएं।

भत्ति काव्य की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां।

इकाई–5

रीतिकाल ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि। रीतिकाल की कालसीमा एवं नामकरण, रीतिकालीन कवियों का आचर्यत्व रीतिमुक्त, रीतिसिद्ध, काव्य धारा के कवि तथा उनका काव्य।

रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्य में अंतर, रीतिकालीन साहित्य की सामनी विशेषताएं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का उद्धव और विकास – आचायय हजारी प्रसाद हर्दिदी
3. संस्कृति के चार अध्ययन – रामधारी सिंह दिनकर
4. हिन्दी साहित्य की भूमिका – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ नागेन्द्र
6. हिन्दी साहित्य का समग्र इतिहास – डॉ राम किशोर शर्मा
7. हिन्दी साहित्य और संवेदना का इतिहास – डॉ रामस्वरुप चतुर्वेदी
8. **भक्तिकालीन** काव्य चिंतन – डॉ प्रेमशंकर

Faculty of Education
Class: M.A. II Sem (HINDI)
Paper I: प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य तथा उनका इतिहास-II
Code: HIN-201

कोर्स आब्जेक्टिव–

हिन्दी साहित्य के प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास का विश्लेषणात्मक ज्ञान देना। मध्यकालीन साहित्य से संबंधित अवधारणाओं और उनके प्रति विभिन्न मतों का परिचय देना।

विषय आउट कम्स–

हिंदी साहित्य के मध्यकालीन युग का विशिष्ट ज्ञान।

इतिहास– आलोचना और विचारकों की समझ विकसित होगी।

1. साहित्य और समाज में भक्ति पंथ के कवियों द्वारा निभाई गई भूमिका को समझना।
2. संत कबीर और उनके लेखन की प्रगतिशील प्रकृति का वर्णन करना।
3. सूरदास की कृष्ण लीला कविता का वर्णन उसके दर्शन से संबंधित करके जिंदगी।
4. भक्ति के दर्शन के साथ तुलसीदास की रामभक्ति कविता का वर्णन पंथ, अपनी कृष्ण भक्ति कविता के संदर्भ में मीरा की दृष्टि को समझना।
5. सामाजिक के संदर्भ में बिहारी के लेखन की सामग्री और कौशल का वर्णन करना, उनके काल की सांस्कृतिक स्थिति।
6. जीवन के दर्शन के साथ–साथ लेखकों की कविताओं का वर्णन करना, प्रसाद, निराला, महादेवी।
7. जीवन के अपने अनुभव के संदर्भ में उम्र की कविताओं का वर्णन।
8. प्रकृति के साथ–साथ नागार्जुन की प्रगतिशील भावना के साथ–साथ प्रकृति से प्यार करना।

पाठ्यक्रम –

इकाई – 1

व्याख्यांश सूरदास– भ्रमरगीत सार–संपादक रामचंद्र शुक्ल, पद क्रमांक 51 से 100

तुलसीदास– राम चरित मानस–अयोध्या कांड, दोहा, क्रमांक 51 से 100

बिहारी– बिहारी रत्नाकार–संपादक जगन्नाथ रत्नाकार, दोहा क्रमांक 1 से 50 ।

इकाई –2

सूरदास, तुलसीदास एवं बिहारी से सम्बन्धित निबन्धातमक प्रश्न

इकाई – 3

भक्तिकाल (सगुण भक्तिधारा) एवं रीतिकाल का इतिहास, प्रवृत्तियाँ और प्रमुख रचनाकारों से सम्बन्धित निबन्धात्मक प्रश्न

इकाई –4

द्रुतपाठ के कवि–नन्ददास, मीराबाई, घनानंद और केशव से सम्बन्धित

लघुउत्तरीय प्रश्न

इकाई–5

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से)

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1.. सूर साहित्य – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

2. सूरदास – मुंशीरम शर्माजी ''सोम''

3. श्री रामचरित मानस – श्री विनायक टीका

4. बिहारी का नया मूलयांकन – डॉ बच्चन सिंह

5. रीतिकाव्य धारा – डॉ रामचन्द्र तिवारी

6. कृष्ण काव्य और सूर – डॉ प्रेमशंकर

7. घननाद – लल्लन राय

8. घननाद काव्य और आलोचना – डॉ किशोरीलाल

FACULTY OF EDUCATION
CLASS: M.A. II SEM (HINDI)
Paper II : आधुनिक हिन्दी गद्य और उसका इतिहास-II
Code: HIN -202

कोर्स आब्जेक्टिव–

हिन्दी साहित्य में आधुनिक हिन्दी गद्य और उसका इतिहास का विश्लेषण। विभिन्न लेखकों और उनकी कृतियों का विशिष्ट ज्ञान।

विषय आउट कम्स

हिन्दी साहित्य के गद्य का विशिष्ट ज्ञान प्रमुख लेखको ं और उनकी कृतियो ं की समझ विकसित होगी।

1. आधुनिक हिन्दी गद्य और इतिहास आदि के बारे में एक विचार प्राप्त करें।
2. स्वतंत्रता आन्दोलन को मजबूत करने के लिए प्रेमचंद की दृष्टि और उनकी चिंता को समझते हैं।
3. चित्रलेखा के माध्यम से भगवतीचरण वर्मा के विचारों को समझते हैं।
4. हजारी प्रसाद द्विवेदी बालकृष्ण भट्ट, महावीर प्रसाद द्विवेदी और के जीवन इतिहास और साहित्यिक कार्यों का अध्ययन।
5. लघु कहानी उसकी परिभाषा महत्व अवधारणा विशेषताओं इतिहास आदि के बारे में एक विचार प्राप्त करने के लिए।
6. प्रख्यात हिन्दी लघुकथाकारों की अभिव्यक्ति की विषय–वस्तु और शैली में बदलाव को समझने के लिए उनकी कहानियों के माध्यम से।
7. जीवन के दर्शन के साथ–साथ चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के साहित्यिक योगदान का वर्णन करें।

पाठ्यक्रम –

इकाई – I व्याख्यांश

1. बाणभट्ट की आत्मकथा–हजारी प्रसाद द्विवेदी
2. निबन्ध–
   (i) देश सेवा का महत्व– बालकृष्ण भट्ट
   (ii) म्युनिसीपलेटी के कारनामें–महावीर प्रसाद द्विवेदी

(iii) काव्य में लोकमंगल की साधनावसा–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(iv) अशोक के फूल–हजारीप्रसाद द्विवेदी

(v) मेरे राम का मुकुट भीग रहा है–विद्यानिवास मिश्र

(vi) प्रिया नीलकंठी–कुबेरनाथ राय

(vii) पगडण्डियों का जमाना–हरिशंकर परसाई

3. निर्धारित कहानियाँ

(i) उसने कहा था (चन्द्रधर शर्मा गुलेरी)

(ii) पूस की रात (प्रेमचंद)

(iii) गुण्डा (जयशंकर प्रसाद)

(iv) अपना अपना भाग्य (जैनेन्द्र कुमार)

(v) लंदन की एक रात (निर्मल वर्मा)

(vi) राजा निरबंसिया (कमलेश्वर)

(vii) सिक्का बदल गया (कृष्णा सोबती)

4. पथ के साथी –महोदवी वर्मा

इकाई –II

बाणभट्ट की आत्मकथा, निर्धारित निबन्ध, कहानी एवं पथ के साथी से समीक्षात्मक प्रश्न

ईकाई –III

हिन्दी, कहानी, निबन्ध एवं अन्य गद्य विधाओ ं (रेखाचित्र, संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी, यात्रावृत्तान्त, व्यंग्य आदि) के इतिहास प्रवृत्तियाँ और प्रमुख रचनाकारो ं से सम्बद्ध निबन्धात्मक प्रश्न।

इकाई –IV

लघुउत्तरीय प्रश्न–

द्रुतपाठ हेतु निर्धारित निम्न गद्यकारो ं पर केन्द्रित दो लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे–

निबंधकार – भारतेन्दु हरिशचन्द्र, प्रताप नारायण मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त, सरदार पूर्ण सिंह।

कहानीकार– अज्ञेय, यशपाल, फणीश्वरनाथ रेणु, भीष्म साहनी, अमरकांत

स्फुट ग्रंथ –1. अमृतराय (कलम का सिपाही); 2. शिवप्रसादसिंह उत्तर योगी; 3. हरिवंशराय

बच्चन (क्या भूलूँ क्या याद करूँ); 4. राहुल सांकृत्यायन (घुमक्कड़ शास्त्र); 5. माखनलाल चतुर्वेदी, साहित्य देवता)

इकाई –V

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से)

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ विजमेंडर
2. भारतेन्दु हरीशचंद और हिन्दी नवजागरण – डॉ रामविलास शर्मा
3. स्वत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य – डॉ लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ रामकिशोर शर्मा
5. कथा साहित्य के सौ बरस – विभूति नारायण रॉय

Faculty of Education
Class: M.A. II Sem (HINDI)
Paper III : भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र-II
Code:HIN -203

कोर्स आब्जेक्टिव–

भारतीय पाश्चात्य काव्यशास्त्र की समझ विकसित होगी। कृतियों के विश्लेषण हेतु पाश्चात्य

चिंतन का पक्ष स्पष्ट होगा।

विषय आउट कम्स–

पाश्चात्य काव्यशस़्त्र की समझ भाषा, कला की आवश्यकता और जीवन के बीच आलोचनात्मक संबंध निर्माण करती है। इससे पाश्चात्य चिंतन परंपरा की समझ विकसित होगी।

1. पश्चिमी कविताओं को समझने के लिए।
2. प्लेटो अरस्तु डॉ.सैमुअल जैसे प्रख्यात पश्चिमी आलोचको के विभिन्न विचारों को समझने के लिए विलियम वर्डसवर्थ मैथ्यू अर्नाल्ड आई। रिचर्डस।
3. रोमांटिकतावाद, आदर्शवाद, यथार्थवाद, अस्तित्ववादी के पश्चिमी साहित्यिक रूझानों के बारे में जानने के लिए।

पाठ्यक्रम –

इकाई – I

प्लेटो : काव्य सिद्धांत

अरस्तु : अनुकरण – सिद्धान्त, त्रासदी– विवेचन,

विरेचन सिद्धान्त

लोंजाइनस : उदात्त की अवधारणा

इकाई – II

ड्राइडन के काव्य सिद्धान्त

वडर्सवर्थ : काव्य – भाषा का सिद्धान्त

कॉलरिज : कल्पना – सिद्धान्त और ललित–कला

इकाई – III

मैथ्यू आर्नल्ड : आलोचना का स्वरूप और प्रकार्य

टी.एस. इलियट : परंपरा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त,

वस्तुनिष्ठ समीकरण, संवेदनशीलता का असाहचर्य आई.ए. रिचर्डस : रागात्मक अर्थ। संवेगो का

संतुलन, व्यावहारिक आलोचना।

इकाई–IV

सिद्धान्त और वाद : अभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषण तथा अस्तित्ववाद।

इकाई–V

आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ : संरचनावाद, शैलीविज्ञान,विखंडनवाद, उत्तर आधुनिकतवाद।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. आलोचक और आलोचना – बच्चन सिंह
2. पाश्चात्य कवि शास्त्र – देवेन्द्रनाथ सिंह
3. नयी समीक्षा – नए संदर्भ
4. काव्य चिंतन की पश्चिमी परंपरा– निर्मला जैन
5. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास– तारकनाथ बाली
6. काव्य शास्त्र – डॉ. कृष्ण देव शर्मा
7. उदात्त के विषय में – निर्मला जैन
8. पाश्चात्य एवं भारतीय काव्य शास्त्र– डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त

Faculty of Education
Class: M.A. II Sem (HINDI)
Paper IV: हिन्दी साहित्य का इतिहास एवं उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि -II
Code:HIN -204

कोर्स आब्जेक्टिव–

हिन्दी साहित्य के इतिहास का विश्लेषणात्मक ज्ञान देना।

इतिहास लेखन, प्रमुख इतिहास ग्रंथ और आधुनिक युगो ं का विशिष्ट ज्ञान प्रदान करना।

विषय ऑब्जेक्टिव

इतिहास लेखन और साहित्यिक इतिहास की समझ विकसित होगी। हिन्दी साहित्य के इतिहास का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

1. सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक और के संदर्भ में आदिकाल और भक्तिकाल के साहित्य को समझते हैं। उन अवधियों की राजनीतिक स्थिति।
2. आदिकाल और भक्तिकाल के सभी प्रख्यात हिन्दी लेखकों की पहचान करना।
3. रीतिकाल नाम के आधार को समझते हैं, रीतिबद्ध, रीतिमुक्त रीतिसिद्ध के नाम से जाना जाता है।
4. आधुनिक काल के संपूर्ण साहित्य और उसकी विशेषताओं को समझते हैं।
5. आधुनिक प्रख्यात हिन्दी लेखकों और उनके साहित्य की पहचान और विश्लेषण करने के लिए अध्ययन।
6. खड़ी बोलियों के विकास का विश्लेषण करने के लिए।

पाठ्यक्रम –

इकाई–I

आधुनिकता की अवधारणा, आधुनिक कल की सामाजिक, राजनीतिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, वर्ष 1857 ईस्वी का प्रथम स्वाधिनता संग्राम एवं पुर्नजागरण, हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास, भारतेन्दु पूर्व हिन्दी गद्य, भारतेन्दु और उनका युग, भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता भारतेन्दु प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं और साहित्यिक विशेषताएं।

इकाई–II

द्विवेदी युगः प्रमुख साहित्यिक रचनाएं हिन्दी नवजागरण और सरस्वती, राष्ट्रीय काव्यधारा के मुख्य कवि, स्वछंदतावाद और उनके प्रमुख कवि, स्वछंदतावादी चेतना का अग्रिम विकास छायावाद, छायावादी काव्य प्रमुख साहित्यकार और साहित्यिक विशेषताएं।

इकाई–III

उत्तर छायावाद की विविध प्रवृत्तियां– प्रगतिवाद, प्रयोगवाद नयी कविताएं, नवगीत समकालीन कविता एवं जनवादी कविता– प्रमुख साहित्यकार रचनाएं और साहित्यिक विशेषताएं, ज्ञानपीठ एवं साहित्य अकादमी से पुरस्कृत रचनाकार।

इकाई–IV

हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाएं उपन्यास, नाटक कहानी निंबंध।

इकाई–V

हिन्दी की अन्य गद्य विधाएं– रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा साहित्य, आत्मकथा, जीवनी, रिर्पोताज डायरी।

हिन्दी आलोचना उद्भव और विकास।

अस्मितामूलक विमर्श– दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, समसामयिक विमर्श।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – रामचन्द्र शुक्ल
2. संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर
3. हिन्दी साहित्य की भूमिका – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
4. हिन्दी रीति साहित्य – राजकमल प्रकाशन दिल्ली
5. हिन्दी साहित्य संवेदना और विकास – डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
6. हिन्दी स्वछंदतावादी काव्य – डॉ. प्रेमशंकर
7. हिन्दी साहित्य 20वीं शताब्दी – नन्द दुलारे वाजपेयी

Faculty of Education
Class: M.A. III Sem (HINDI)
Paper I : आधुनिक हिन्दी काव्य और उसका इतिहास-I
Code: HIN -301

कोर्स आब्जेक्टिव–

हिन्दी साहित्य के आधुनिक हिन्दी काव्य और उसके इतिहास का विश्लेषणात्मक ज्ञान देना। विभिन्न कवियों और उनकी कविताओ ं का विशिष्ट ज्ञान।

विषय आउट कम्स

हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग का विशिष्ट ज्ञान। प्रमुख कवियों व उनकी कविता की समझ विकसित होगी।

1. **सामाजिक–**आर्थिक के संदर्भ में आधुनिक काल के साहित्य और विशेषताओं को समझना।
   उस काल की सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थिति।
2. मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य साहित्य का अध्ययन।
3. कविताओं का सामाजिक महत्व।

पाठ्यक्रम –

इकाई–1

व्याख्यांश–

1. **मैथिली शरण गुप्तः** साकेत (नवमसर्ग)
2. **जयशंकर प्रसादः** कामायनी (चिंता, श्रृद्धा एवं इंडा सर्ग) आंसू काव्य।
3. **सूर्यकांत त्रिपाठी निराला–** राम की शक्ति पूजा, सरोज स्मृति, जुही की कली'' बांधान न नाव इस ठाँव बंधु।
4. **सुमित्रा नंदन पंत–** प्रथम रश्मि, परिवर्तन

इकाई–2

मैथिली शरण गुप्त एवं जयशंकर प्रसाद से संबंधित समीक्षात्मक प्रश्न।

इकाई–3

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला एवं सुमित्रा नंदन पंत से संबंधित समीक्षात्मक प्रश्न।

इकाई–4

आधुनिक हिन्दी काव्य (छायावाद तक) की प्रमुख प्रवृत्तियां।

इकाई–5

द्रुतपाठ के निर्धारित जगन्नाथ दास रत्नाकर, अयोध्या सिंह उपाध्याय, ''हरिऔध'' महादेवी वर्मा और बालकृष्ण शर्मा, नवीन से संबंधित लघुउत्तरीय प्रश्न।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. मैथिलीशरण गुप्त –पुर्नमूल्यांकन – डॉ नगेन्द्र
2. जय शंकर प्रसाद – नंद दुलारे वाजपेयी
3. कामायनी पुर्नविचार – मुक्तिबोध
4. निराला – रामविलास शर्मा
5. सुमित्रा नंदन पंत – जीवन और साहित्य–डॉ शांति जोशी
6. हिन्दी स्वछंदतवादी काव्य – डॉ. प्रेमशंकर
7. कविता के सौ बरस – लीलाधर मंडलोई
8. प्रसाद की काव्य भाषा – रचना आनंद गौड़

Faculty of Education

Class: M.A. III Sem (HINDI)

Paper II : भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा-I

Paper Code:HIN -302

कोर्स आब्जेक्टिव–

भाषा की प्रकृति और संरचनाः भाषा और संप्रेषण, मानवेतर संप्रेषण और मानव–संप्रेषण भाषा– व्यवस्था (लांग) और भाषा व्यवहार (परोल), भाषा के घटकः ध्वनि, शब्द, (रूप) वाक्य,प्रोक्ति (संवाद) बहुभाषित, सार्वभौमिक व्याकरण।

विषय आउट कम्स–

भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा की समझ विकसित होगी, हिन्दी साहित्य की विधाओ ंका विश्लेषणात्मक अध्ययन।

1. किसी भाषा के अर्थ अवधारणा विशेषताओं और प्रकार विकास को समझना।
2. भाषा विज्ञान के अर्थ अवधारणा प्रकार और विभिन्न भाग को समझते हैं। यह एक पूर्ण भाषा है, इसका विस्तृत अध्ययन।

पाठ्यक्रम –

इकाई–1

भाषा और भाषा विज्ञान–

भाषा की परिभाषा और अभिलक्ष्य, भाषा, व्यवस्था और भाषा–व्यवहार, भाषा संरचना और भाषिक–प्रकार्य। भाषा विज्ञान स्वरूप एवं व्याप्ति, अध्ययन की दिशाएं–वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक।

इकाई–2

स्वन प्रक्रिया–स्वरूप और शाखाएं, वाग्यंत्र, और उनके कार्य, स्वनिम की अवधारणा–स्वनों का वर्गीकरण, स्वन गुण, स्वनिक–परिवर्तन।

इकाई–3

व्याकरण– रूप विज्ञान का स्वरूप, रूपिम की अवधारणा वाक्य की अवधारणा–वाक्य के **भेद–वाक्य–**विश्लेषण–निकटस्थ अव्यय विश्लेषण, गहन–संरचना और बाह्य–संरचना।

इकाई–4

अर्थविज्ञान–अर्थ की अवधारणा। शब्द और अर्थ का संबंध। अर्थ प्राप्ति के साधन और अर्थ परिवर्तन।

इकाई–5

साहित्य और भाषा विज्ञान–साहित्य के अध्ययन में भाषा विज्ञान के अंगों की उपयोगिता।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी– डॉ सुनीता कुमार
2. हिन्दी भाषा का इतिहास – डॉ. भोलानाथ तिवारी
3. आधुनिक भाषा विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी
4. हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास– डॉ. उदय नारायण तिवारी
5. हिन्दी व्याकरण – कामता प्रसाद गुरू
6. भाषा विज्ञान – डॉ राजमानी शर्मा
7. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत – डॉ राम किशोर शर्मा
8. भाषा चिंतन के नए आयाम – डॉ राम किशोर शर्मा
9. भाषा विज्ञान, हिन्दी भह और लिपि – डॉ राम किशोर शर्मा
10. ग्रामीण हिन्दी बोलिया – हरदेव बाहरी

Faculty of Education
Class: M.A. III Sem (HINDI)
Paper III : नाटक निबंध एवं गद्य विधाएं-I
Code: HIN -303

कोर्स ऑब्जेक्टिव–

हिन्दी साहित्य की गद्य की विधाएं नाटक और निबंध का विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं नाटक और निबंध का ऐतिहासिक अध्ययन।

विषय आउट कम्स–

नाटक और निबंध का सामाजिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन।

1. प्रसाद के लिए संघर्ष के संदर्भ में ध्रुवस्वामिनी द्वारा लिखित नाटक को समझना पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की स्वतंत्रता।
2. मध्यवर्ग के बारे में प्रेमचंद के दृष्टिकोण और उनकी चिंता को समझना गबन उपन्यासों के माध्यम से भारत में स्वतंत्रता आन्दोलन को मजबूत करना।
3. लघु कथाओं में सामाग्री और अभिव्यक्ति की शैली में परिवर्तन को समझना प्रेमचंद, उम्र, मन्नू भंडारी, भीष्म की कहानियों के माध्यम से अलग–अलग समय सुहानी, स्वयं प्रकाश और उदय प्रकाश।
4. भारतेन्दु हरिशचंद्र और बालकृष्ण के राष्ट्रवाद की भावना को समझना।

पाठ्यक्रम –

इकाई–1

(1) प्रसाद युगीन एवं प्रसादोत्तर नाटकों की प्रमुख प्रवृत्तियां।

(2) हिन्दी रंगमंच और उसका विस्तार।

इकाई–2

(1) चन्द्रगुप्त– जयशंकर प्रसाद।

(2) अंधा युग– धर्मवीर भारती।

आषाढ़ का एक दिन– मोहन राकेश

इकाई–4

एकांकी (1) दीपदान – रामकुमार वर्मा

(2) तांबे के कीड़े– भुवनेश्वर

(3) रीड़ की हड्डी– जगदीश चंद्र माथुर

(4) तोलिये – उपेन्द्रनाथ अश्क

(5) नये मेहमान– उदयशंकर भट्ट

इकाई–5

द्रुत पाठ– भारतेन्दु हरिशचंद्र, शंकर शेष, लक्ष्मीनारायण लाल हबीब तनवीर।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन– डॉ. जगन्नाथ प्रसाद
2. हिन्दी नाटकों का मसीहा – मोहन राकेश
3. हिन्दी नाटक उद्भव और विकास– डॉ. दशरथ ओझा
4. मोहन राकेश के साहित्य का समग्र मूल्यांकन– सुरेश चन्द्र
5. बिसवी शताब्दी का हिन्दी नाटक और रंगमंच– गिरीश रस्तोगी
6. हिन्दी साहित्य कोश भाग–1– पारिभाषिक शब्दावली ज्ञानमंडल लिमिटेड वारणासी
7. मोहन राकेश और हिन्दी नाटक– डॉ. गिरीश रस्तोगी
8. हिन्दी नाटक का आत्म संघर्ष– डॉ. गिरीश रस्तोगी

Faculty of Education

Class: M.A. IV Sem (HINDI)

Paper I आधुनिक हिन्दी काव्य -II

Code: HIN -401

कोर्स ऑब्जेक्टिव –

आधुनिक हिन्दी काव्य और उसका इतिहास का विश्लेषणात्मक ज्ञान देना। आधुनिक हिन्दी कवियों का विशिष्ट ज्ञान।

विषय आउट कम्स –

हिन्दी साहित्य के आधुनिक हिन्दी कवियों के इतिहास का अध्ययन एवं प्रमुख कवियों व युग की समझ विकसित करना।

1. अज्ञेय, भवानी प्रसाद मिश्र मुक्ति बोध नागार्जुन के कविताओं का अध्ययन।
2. आशा के मूल्यों को जानने के लिए और छायावाद की साहित्यिक प्रवृत्तियों को जानने में सक्षम है।
3. छायावादी लेखकों के बारे में जानने में सक्षम जयशंकर प्रसाद निराला पंत महादेव वर्मा दिनकर।
4. अपने अनुभव और अपने जीवन के दर्शन से संबंधित करके आधुनिक कतिवाओं को समझना।
5. केदारनाथ सिंह धर्मवीर भारती नागार्जुन शमशेर बहादुर के विचारों को समझे।

पाठ्यक्रम –

इकाई–1

1. अज्ञेय– नदी के द्वीप, असाध्य वीणा, यह दीप अकेला, कलगी बाजरे की हरीघास पर क्षण भर।
2. मुक्तिबोध– भूल गलती, अंधेरे में ब्रहम्राक्षस।
3. भवानी प्रसाद मिश्र– गीत फरोश, सतपुड़ा के घने जंगल।
4. नागार्जुन– बादल को घिरते देखा है।

इकाई–2

अज्ञेय से संबंधित समीक्षात्मक प्रश्न।

इकाई–3

मुक्तिबोध से संबंधित समीक्षात्मक प्रश्न।

इकाई–4

भवानी प्रसाद मिश्र से संबंधित समीक्षात्मक प्रश्न

इकाई–5

त्रिलोचन, सुदामा, प्रसाद, धूमिल, केदारनाथ अग्रवाल, दुष्यंत कुमार त्यागी, रघुवीर सहाय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. कविता के नये प्रतिमान – डॉ. नामवर सिंह
2. नई कविता – स्वरूप और समस्याएं–डॉ जगदीश चन्द्र गुप्त
3. मुक्तिबोध – कविता और जीवन विवके– चंद्रकांत देवतले
4. निराला और मुक्तिबोध – नन्द किशोर नवल
5. आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब विधान का विकास– केदारनाथ सिंह
6. नयी कविता और अस्तित्ववाद– डॉ रामविलास शर्मा
7. नयी कविता का आत्म संघर्ष– मुक्तिबोध
8. अज्ञेय और आधुनिक रचना समस्या– डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी

Faculty of Education

Class: M.A. IV Sem (HINDI)

Paper II – भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा-II

Code: HIN -402

कोर्स आब्जेक्टिव–

भाषा विज्ञान की विशिष्ट समझ विकसित होगी। भाषा की विशेषताओ और उपांगो का विश्लेषणात्मक ज्ञान होगा।

विषय आउट कम्स–

भाषा और उसके उपांगो का ज्ञान।

1. कार्यात्मक हिन्दी के विभिन्न रूपों को समझने के लिए।
2. कार्यात्मक हिन्दी के आवेदन के अर्थ और क्षेत्र का अध्ययन करनां
3. विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी के उपयोग को समझते हैं।
4. 1993 और 1976 की आधिकारिक भाषा अधिनियमों का अध्ययन करें।
5. विभिन्न प्रकार के आधिकारिक पत्रों और छात्रों के बारे में जानने के लिए वे पत्र कैसे लिख सकते हैं।
6. हिन्दी भाषा के तकनीकी शब्दों के बारे में जानने के लिए।
7. एनोटेशन लेखन रिपोर्ट लेखन संक्षेपण लेखन का अभ्यास।
8. अनुवाद का अच्छा ज्ञान प्राप्त करते हैं।
9. अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद के बारे में जानने के लिए वे अनुवादक दुभाषिया आदि बन सकते हैं।
10. छात्र इस पेपर को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद आसानी से विभिन्न क्षेत्र में कार्यरत हो सकते हैं।
11. संचार कौशल सीखने के लिए।

पाठ्यक्रम –

इकाई–1

हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि– प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएं– वैदिक तथा लौकिक संस्कृति और उनकी विशेषताएं, मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएं, पालिक प्राकृत, शौरसेनी अर्द्ध मागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएं, मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएं और उनका वर्गीकरण।

इकाई–2

हिन्दी का भौगौलिक विस्तारः हिन्दी की उप भाषाएं, पश्चिमी हिन्दी पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियां, खड़ीबोली ब्रज और अवधि की विशेषताएं।

इकाई–3

हिन्दी का भाषिक स्वरूपः हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था– खंडय, खण्डयेत्तर, हिन्दी शब्द– रचना उपसर्ग, प्रत्यय, समास, रूप रचना, लिंग वचन और कारक, व्यवस्था के संदर्भ में हिन्दी की संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया वाक्य पदक्रम और अन्वित।

इकाई–4

हिन्दी के विविध रूपः संपर्क भाषा, राष्ट्र भाषा, राजभाषा के रूप में हिन्दी माध्यम भाषा संचार, भाषा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति।

इकाई–5

हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाएंः आंकड़ा– संसाधन और शब्द संसाधन, वर्तनी, मशीनी, अनुवाद हिन्दी भाषा– शिक्षण, देवनागरी लिपि और मानकीकरण।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास– डॉ. उदयनारायण तिवारी
2. भाषा विज्ञान– डॉ. भोलानाथ तिवारी
3. हिन्दी व्याकरण – कामताप्रसाद गुरू
4. ग्रामीण हिन्दी बोलियां– हरदेव बाहरी
5. हिन्दी भाषा का विकास– डॉ. रामकिशोर वर्मा
6. भाषा विज्ञान हिन्दी भाषा और लिपि– डॉ. रामकिशोर शर्मा

Faculty of Education
Class: M.A. III Sem (HINDI)
Paper III:नाटक निंबंध और गद्य की विधाएं-II
Code: HIN -403

कोर्स ऑब्जेक्टिव–

हिन्दी साहित्य की गद्य की विधाएं नाटक और निबंध का विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं नाटक और निबंध का ऐतिहासिक अध्ययन।

विषय आउटकम्स –

नाटक और निबंध का सामाजिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन।

1. निर्मला के माध्यम से मध्यम वर्ग की महिला के बारे में प्रेमचंद के दर्शन को समझते है।
2. हिन्दी लघु कथाओं के साहित्यिक रूझान का अध्ययन करें।
3. जयशंकर प्रसाद, यशपाल और रांगेय राघव के जीवन इतिहास और साहित्यिक कार्यों का अध्ययन करें।
4. हिन्दी निंबंध लेखन की साहित्यिक प्रवृत्तियों का अध्यन करना।
5. प्रख्याता हिन्दी निबंध लेखकों की अभिव्यक्ति की शैली में विभिन्न विचारों और परिवर्तन का अध्ययन करें।
6. वर्तमान विषयों और साहित्य पर अधिक ज्ञान प्राप्त करने और यह जानने में सक्षमहै कि कैसे लिखें।
7. हिन्दी के एकांकी नाटक के साहित्यिक रूझान का अध्ययन करें।
8. प्रख्यात हिन्दी एक अधिनियम के लेखकों को उनके लेखन के माध्यम से जानने के लिए।

पाठ्यक्रम –

इकाई–1

हिन्दी गद्य विधाओं का स्वरूप एवं प्रवृत्तियों– निबंध, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, रिपोतार्ज, डायरी एवं फिचर लेखन।

इकाई–2

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल– चिंतामणि कविता क्या है, श्रृद्धा और भक्ति, क्रोध, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी– कल्पलता– अशोक के फूल, कुटज।

इकाई–3

मुक्तिबोध– एक साहित्यिक की डायरी, अज्ञेय, अरे यायावर रहेगा याद, हरविशं राय बच्चन क्या भूलु क्या याद करूं।

इकाई–4

हरिशंकर परसाई– प्रतिनिध व्यंग्य– विकलांग श्रृद्धा का दौर, भोलाराम का जीव, एक दीक्षांत भाषण।

इकाई–5

महादेवी वर्मा– पाठ के साथी– रविन्द्रनाथ टैगोर, मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्राकुमारी चौहान सूर्यकांत त्रिपाठी निराला।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. हिन्दी निबंध के आधार स्तम्भ– डॉ हरिमोहन
2. प्रतिनिधि हिन्दी निबंधकार – डॉ हरिमोहन
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ नगेन्द्र
4. हिन्दी नाटक के सौ बरस– शिल्पायन

Faculty of Education
Class: M.A. IV Sem (HINDI)
Paper IV: कबीरदास
Code: HIN -404

कोर्स ऑब्जेक्टिव–

1. जीवन के दर्शन के साथ–साथ कबीरदास के साहित्य को समझना।
2. भक्तिकालीन संत कति कबीरदास ओर जायसी के लेखन का अध्ययन करने के लिए।
3. कबीरदास जी की निर्गुण भक्ति और राम भक्ति कविता का अध्ययन करने के लिए।

   भक्ति संस्कृति का दर्शन और हमारे दिन–प्रतिदिन के जीवन पर इसका प्रभाव।
4. जीवन के दर्शन के साथ–साथ दादूदयाल, मीराबाई और रसखनन के साहित्यिक कार्यों को भी समझते हैं।

पाठ्यक्रम –

इकाई–1

कबीर ग्रंथावली –

(क) प्रारंभिक 25 पद व्याख्याएं एवं विवेचन के लिए निर्धारित अंश।

(ख) रमैनी समग्र।

इकाई–2

आलोचनात्मक प्रश्न– निर्गुण संप्रदाय और कबीर, संत काव्यधारा में कबीर का स्थान कबीर का दर्शन एवं भक्तिभावना।

इकाई–3

कबीर के दार्शनिक विचार, कबीर की काव्य प्रतिभा, भाषा एवं अभिव्यंजना, कबीर का रहस्यवाद हठयोग की साधाना कबीर का समाज सुधारक रूप एवं युग सापेक्षता।

इकाई–4

कबीर की सखियों का महत्व, कबीर की योग फरक रूपक और उलटबंसियाएं।

इकाई–5

द्रुतपाठ– (1) नानक (2) दादू (3) पीपा (4) रैदास

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. कबीर ग्रंथावली – डॉ. श्याम सुन्दर दास
2. कबीरदास – डॉ. कांतिकुमार जैन
3. संत कबीर – डॉ. रामकुमार वर्मा
4. कबीर एक अनुशीलन – डॉ. रामकुमार वर्मा
5. कबीर का रहस्यवाद – डॉ. रामकुमार वर्मा
6. कबीर वङ्ग्यमय – जयदेव सिंह
7. कबीर और जायसी ग्राम समाज एवं संस्कृति– डॉ. लक्ष्मीचंद
8. कबीर एक नई दृष्टि – डॉ. रघुवंश